हिंदी - देवताओं की मृदु भाषा

(रचयिता - डॉ यतेंद्र शर्मा)

हिंदी हिन्द की है शान, देवों की भाषा विज्ञान।
नागरी नगर की मान, देवनागरी है सुर शान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (1)

भारतीयों की पहचान, देश प्रेम की परिज्ञान।
भाषा मृदु और महान, तुलसी रचें चरित राम॥
करें हम शत शत प्रणाम। (2)

सुभद्रा जी की है जान, लक्ष्मी बाई बीर गान।
चंदबरदाई का वरदान, पृथ्वीरासो दियो ज्ञान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (3)

समाहित कबीर ज्ञान, गीतगोविन्द गोपीगान।
रहिमन सीख संधान, रसखान प्रेम गोदाम।।
करें हम शत शत प्रणाम। (4)

माँ उर्मिल चरित गान, दें साकेत मैथली दान।
मीरा भक्ती का बखान, सहजो साक्षी गुरुमहान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (5)

या प्रेमचंद गोदान, दिनकर हारे को हरिनाम।
हरिऔध की है आन, रुक्मणी परिणय ज्ञान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (6)

कन्हैया मुंशी परशुराम, प्रसाद कामायनी जान।
बच्चन जी का सोपान, या मधुशाला गीत गान॥
करें हम शत शत प्रणाम॥ (7)

निराला जी सखी ज्ञान, अंधा युग धर्मवीर शान।
शिवानी हमारा अभिमान, दें विषकन्या दान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (8)

चाहे पन्त का सत्यकाम, हरिश्चन्द कार्तिकस्नान।
महादेवी कोयल निर्मान, सभी करें हिय मुस्कान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (9)

हम करें हिंदी का मान, तभी होगी देश की शान।
लें सपथ आज सब आन, है हिंदी मातृ समान॥
करें हम शत शत प्रणाम। (10)